ORIGINAL RESEARCH PAPER

Hindi

KEY WORDS:

ज़किया रफ़त कृत 'ये खालिश कहां से होती' में बिम्ब विधान

सुमन रानी MA Hindi, Net, B.ed, 17/18 Prem Nagar, Sirsa, Haryana-125055

ज़किया रफ़त कृत 'ये खालिश कहां से होती' में बिम्बों की प्रधानता विशेष रूप से दृष्टिगोचर होती है। सतसई कवियों के रूप–बिम्ब मुख्यतः समग्र देह की रूप–राशि तथा शरीर के विभिन्न अंगों के रूप–लावण्य के द्योतक हैं। अधिकांश बिम्ब कमनीय कामिनियों के शरीर, नेत्रा, मुख, भ्रू, नासिका, हस्तकेश, वेशभूषा तथा शृंगार से संबंधित हैं। ज़किया रफ़त का बिम्ब प्रयोग प्रसिद्ध सुन्दरता विषयक उक्ति 'क्षणे–क्षणे यन्नवता मुपैति तदैव रूंप रमणीयता' को चरितार्थ कर रहा है। पुरुष का आकर्षण शरीर–सौन्दर्य की ओर होता है, नायक का नायिका के प्रति कामाकर्षण में नायिका का अप्रतिम शरीर–सौन्दर्य ही कारण नहीं बना है। इस संपूर्ण बिम्ब में एक ओर मसृणता तथा कोमलता व्यक्त हुई है वहीं उसमें आह्लादकारिणी वायवीयता की भी समायोजना हुई है। जैसे––

'तुम्हारे मस्तक की
शोभा बढ़ाने वाला तिलक
मेरी घिसी गई
अस्थियों के चंदन से
लगाया गया है'[2]

स्वेद–बिन्दुओं को उसके मुख पर छलका हुआ देखकर प्राणों की ईर्ष्या, सामीप्य–लोभ की तृषा, अपने पीतपट से उसके स्वेद कणों को पोंछने की ललक और प्रेयसी का लोभ और रोमांच कवयित्री के मन में बढ़ता ही जाता है। इस बिम्ब में अन्तस् की सुप्त भावनाओं की आकस्मिक तीव्र उमड़न–कारिणी शक्ति विद्यमान है। नायिका के मुख पर कामोद्रेक सूचक भाव नायक के अंतःकरण में असीम मादकता भर देते हैं। पतिव्रत धर्म के भावों के लिए बिम्ब –योजना देखिए–

'नामी योगियों को
नतमस्तक कर
दिया है,
तुमने प्रेमियों की
दुनियां में
मजनू को पीछे
छोड़
कलयुग के
अमर प्रेमी
का खिताब पा लिया'[3]

नाद के संवेदन को ग्रहण करने वाली इन्द्रिय कर्ण हैं। नाद–सौन्दर्य काव्य को रमणीय तथा स्मरणीय बनाता है। वस्तुतः कल्पना, विचार तथा भावना को उद्बुद्ध एवं उद्वेलित करने की शक्ति में ही नाद–सौन्दर्य का महत्व सन्निहित रहता है। कवि ने वर्षा का चित्रण करते हुए विभिन्न प्राकृतिक व्यापारों के द्वारा नायिका के मन में उठने वाली व्याकुलता को निम्न नाद–बिम्ब के द्वारा व्यक्त किया है। ''महाभारत'' कविता के माध्यम से युद्ध का परिवेश नाद सौंदर्य उत्पन्न कर रहा है–

'मेरे भीतर
मचा हुआ है
एक महाभारत,
दो विशाल सेनाएँ
आमने–सामने
युद्व को तैयार
खड़ी हैं ।
एक ओर व्यधियों की
शूल, टीस, सूई,
बर्मो व पत्थरों
से सुसज्जित कौरवों की
वज्र सेना है'[4]

इनके काव्य में रासलीला, रण प्रयाग, वाद्ययंत्रा, चटक, अर्थ–ध्वनन, पशु–पक्षी अलिगण, पावस झूला, मेघ–गर्जन आदि के प्रसंगों में नाद–बिम्ब की योजना मिलती है। ये प्रसंग नायक के ऐन्द्रिय संवेदन तथा कामेच्छा को उद्भूत करने में पूर्णतः सक्षम हैं। 'एक स्वर में' पंक्ति स्वतः नाद सौंदर्य उत्पन्न कर रही है–

'कलयुग के
अमर प्रेमी
का खिताब
पा लिया हैं,
तुम्हारी दरियादिली और
कर्तव्यनिष्ठा
से प्रभावित होकर
सामान्य से लेकर
विद्वज्जनों की सभा ने
एक स्वर में
तुम्हें 'सन्त' का
दर्जा दे दिया हैं,'[5]

गंध–बिम्बों में घ्राणेन्द्रिय द्वारा प्राप्त घ्राण–विषयक अनुभूतियों का मूर्त्तन रहता है। गंध की ओर उन्हीं कवियों की दृष्टि जाती है जिनकी ग्रहणशीलता अत्यंत तीव्र तथा संवेदना अत्यधिक कोमल होती है। सतसई कवियों ने अपने गंध–बिम्बों में घ्राणेन्द्रिय को गंध–सने स्पर्शों द्वारा बार–बार छूने के प्रयास किए हैं।

सुगंधित मलयज घनसार तथा धरा से उठती हुई भीनी–भीनी पुष्पों की महक राधा तथा कृष्ण को कामोन्मत्त कर देती है। उक्त कविताओं में ससात्मकता, गंधत्मकता तथा तृषा आदि से संबद्ध बिम्बों की अभिव्यंजना हुई है।

''मायावी'' कविता का उदाहरण देखिए–

'मैं एक मानवी नहीं
मायाविनी हूँ
जिसने अपनी मायावी शक्तियों से
तिलिस्मों का ताना–बाना
बुन रखा हैं
जिसमें अनेक
चमत्कारी रहस्यमयी गुफाएँ हैं
बोतल में कैद
जिन है
ऊँची किलेनुमा
इमारते हैं
अभेद्य गढ़ हैं
जादुई घोड़े हैं,'[6]

'पीत स्पर्श' कविता में कवि ने घ्राण–बिम्ब का संयोजन किया है।

'मेरे रक्त को
उबाल–उबालकर
वाष्प बनाकर
उड़ा रहा हैं,
यह पीत स्पर्श
मेरे शरीर की हरियाली को
पतझड़–सा आक्रमणकारी हो
शाखाओं से तोड़कर
वायु में
उड़ा रहा हैं ।'[7]

वस्तुतः सुमन–पराग–मिश्रित पवन में पृथ्वी की मनभावन गंध युगल दम्पत्ति की आत्म–चेतना को कुंठित कर देती है। अग्नि–कीट के समान जलती हुई भी जीवित बनी उनकी चेतना संपूर्ण रूप में राधामय हो उठती है। 'बीते कल के साथ' कविता से एक उदाहरण देखिए–

'आज लाखों मील की
दूरी तय करके
तुम्हारे अस्तित्व को
राधा–कृष्ण–सा
अलग नहीं कर
पा रहा हूँ,'[8]

अल्हड़ युवतियाँ सिमट रही हैं, गंधभीनी हवा उनके नासिका–रन्ध्रों में गमकने लगती है। स्पर्श–रूप में गंध–सुख की मधुर प्रेरणा आनन्दमयी सिहरन से चेतना को उद्वेलित कर देती है।

स्पर्श–संबंधी बिम्बों की संवेदना त्वचा के प्रति होती है। स्पर्शात्मक बिम्बों में स्पर्श विषयक विशिष्ट अनुभूति को त्वचा के माध्यम से संवेद्य बनाकर वर्ण्य–विषय के समग्र सारभूत प्रभाव को मूर्तिमत्ता प्रदान की जाती है। अपने कोमल–कठोर आदि स्पर्श–जनित गुण के लिए विख्यात विभिन्न पदार्थों का उल्लेख होते ही सहृदय की अंतश्चेतना में तत्संबंधी स्पर्शानुभूति का बिम्ब उभर आता है। 'यह तुम थीं' कविता स्पर्श–बिम्ब के संयोजन में सफल रही है।

'तुम्हारे जीवन के
रेगिस्तान को समझने
के लिए पर्याप्त थीं,
तुम्हें देख
पहले मैं डरा
फिर साहस बटोरकर
धड़कते हुए दिल से
तुम्हारा बर्फ–सा ठण्डा
हाथ पकड़ा
तब समझा
तुम जीवित अवश्य थीं
लेकिन तुममें जीवन
का कोई संकेत
नहीं था'[9]

मिलनोल्लास में नायिका को जहाँ प्रिय और उसके संपर्क में आने वाले विषय सुखदायी प्रतीत होते हैं विरहोन्माद में वही विषय उसकी खिन्नमनस्कता तथा दुःख के कारण बन जाते हैं। कामदेव को दग्ध करने वाली शिव की कोपाग्नि ही मानो नायिका को विरह–ज्वाला बनकर जला रही है। नायिका की अतृप्त लालसा चिन्ता का स्वरूप धारण करके उसमें कसक उत्पन्न कर देती है। इस 'काम' का स्पर्श प्रस्तुत बिम्ब में अनुभव होता है।

'अनूठा संग्रह' कविता का एक अन्य उदाहरण देखिए–

झूल रहे हैं
गले में मुँगा, मोती, माणिक

पन्ना, हीरा, नीलम
पुखराज का
सतलड़ा हार
लटक रहा हैं,
पन्नों से जड़े
कंगन कलाइयों में
खनखना रहे हैं,
नीलम के बाजूबन्द
बाजुओं में बँधे हैं
हीरा जड़ित कमरपेटी
कमर पर बँधी हैं,
पैरों में मूँगे के
नूपुर ध्वनित हो
रहे हैं,[10]

काम की अनिर्दिष्ट अनुभूति से विकल गोपिका का अंतःकरण जीवन के प्रत्यक्ष अभावों से कुंठित हो जाता है इसलिए प्रिय के रूप–माधुर्य की स्मृति उसको किंकर्तव्यविमूढ़ कर देती है।

'वह दर्द, जो खुशबू बनकर
गूँज रहा हैं मेरे कानों में ।
वह दर्द, जो पसीज रहा हैं
मेरी हथेलियों के बीच ।
वह दर्द, जो
सनसना रहा हैं मेरे पैरों में ।'[11]

सौन्दर्य–वर्णन के प्रसंग में प्रायः 'लोने' तथा 'मीठे स्वाद' की यदा–कदा चर्चा मिल जाती है। सतसई कवियों की नायिका का सौन्दर्य भी लावण्यमय है। उक्त स्वाद–बिम्ब में कवि ने नायिका के सौन्दर्य को माधुर्य तथा लावण्य नामक स्वादों से व्यंजित किया है। वस्तुतः ये दोनों स्वाद नायिका के कामाकर्षक सौन्दर्य तथा उसके द्रष्टा के मन पर पड़ने वाले रोमांच के रूप में व्यक्त हुए हैं। इसी प्रकार नायिका की मीठी मुस्कान का संकेत किया है।

'तुम्हें देवबालाऐं चन्दन
का उबटन लगाकर
नहला–धुलाकर
साज–श्रृंगार कर
खुशबुओं में महकाकर
स्टरलाइज वस्त्र
पहनाकर चली गई हैं,
मैं नहीं समझ
पा रही हूँ'[12]

मनोवैज्ञानिक दृष्टि से मीठी मुस्कान से आशय उस कामोद्दीपक मुस्कान से है जिसके द्वारा व्यक्ति काम से विवश होकर उद्दीपन की ओर खिंचा चला आता है।

परोक्ष अनुभव से संबध बिम्ब चेतन तथा अचेतन मन की क्रिया के भेद से दो वर्गों में विभक्त किए जा सकते हैं – चेतन मन के बिम्ब तथा अचेतन मन के बिम्ब। चेतन मन के बिम्ब का प्रमुख भेद है – स्मृति–बिम्ब तथा अचेतन मन के बिम्बों के अंतर्गत सामान्यतः स्वप्न–बिम्ब और मिथ्याप्रत्यक्ष–बिम्ब आते हैं।

जकिया रफत कृत 'ये खालिश कहां से होती' में बिम्ब–निर्माण के समय इन्द्रियों के विषय कवि के सम्मुख प्रत्यक्ष रूप से उपस्थित नहीं हुए। कवि स्मृति के सहारे इन्द्रियों की पूर्वानुभूतियों का स्मरण कर उन्हें बिम्ब रूप प्रदान करता है। पूर्व स्मृतियां वस्तुतः बिम्ब रूप ही होती हैं जिनके साथ विगत अनुभव जुड़े रहते हैं। कवि स्मरण करता है कि जो प्रेम भरी बातें पहले होती थीं वे अब कहाँ? यही बात अब कवि हृदय में अमृत के समान ठंडक पहुँचाती है परन्तु मन को अतीत की बातों से जितना बहलाया जाता है। 'मोक्ष के द्वार से' कविता का एक उदाहरण देखिए–

'बिटिया का चाकलेटी दुलार
नोटों के उड़ते हुए
चीथड़े
हाहाकार मचाते
प्रतिशोध की
अग्नि में जलते
लोग
सुनूँगी एक हथेली
से बजने वाली
ताली की
गड़गड़ाहट
फेरकर वहाँ से दृष्टि
खो जाऊँगी
असीम सुख–शान्ति में
सदैव–सदैव के लिए ।'[13]

किसी व्यक्ति के साथ विगत समय में मानसिक एवं शारीरिक निकटता जितनी अधिक होगी उसका अभाव वर्तमान में व्यक्ति को उतना ही अधिक कचोटेगा। यहाँ गोपियों की स्मृति में अतीत का सुखद समय तथा उसी अनुपात में वर्तमान की असह्य वेदना की अभिव्यक्ति हुई है। अन्यत्रा यौवन के उभार को पहुँची हुई विरहिणियाँ प्रिय के प्रवासी होने के कारण अपने शरीर ही में ज्वाला और स्फुलिंग के दर्शन करती है। वस्तुतः काम की तीव्र मादकता उसकी चेतना एवं इन्द्रियों को भयानक उत्तेजनामयी शक्ति से आविष्ट कर डालती है तथा धधकती हुई कामना से शरीर में कामाग्नि प्रज्वलित होने लगती है। 'ढलती शाम के साथ'कविता से उदाहरण देखिए–

'खुले नेत्रों से
रक्त ऑसू बनकर
टपक रहा है,
रक्तविहीन शिराऐं
जलविहीन मछलियों–सी
तड़प–तड़पकर
दम तोड़ रही हैं,'[14]

कवि–मन में अवस्थित वियोग का 'डर' तथा सुखों के समाप्त हो जाने के 'भय' का उक्त स्मृति–बिम्ब के द्वारा उन्नयन हुआ है। स्मृति–बिम्ब का काव्य–बिम्ब के साथ सीधा संबंध है। इनके द्वारा काव्य का समस्त व्यापार चलता है। प्रत्यक्ष ऐन्द्रिय बिम्ब वास्तव में स्मृति–बिम्बों के रूप में परिणत होकर ही काव्य–सामग्री का अंग बनते हैं क्योंकि काव्य का विषय प्रत्यक्ष अनुभव न होकर अनुभव का संसार होता है।
'निर्माण' कविता के माध्यम से कवि के भाव देखिए–

'सामाजिक वास्तविकाताओं को
उसके शब्द ज्ञान की
नदियॉ बनकर
नयी पौध को
सींच रहे हैं,
उसके हाथ ज्ञानदीप बनकर
चमक रहे हैं ।
आनेवालो को रास्ता दिखाने
उसके हृदय की वीणा में
मानव प्रेम का साज
बज रहा हैं,
वह शान्तिदूत
बनकर
अमरता की ओर
बढ़ रहा हैं ।'[15]

निष्कर्षः

बिम्ब की रचना निद्रित अवस्था में होती है। इस अवस्था में अवचेतन अथवा अचेतन मन नाना प्रकार के पूर्वानुभव के संस्कारों का संयोजन कर चित्रा–विचित्रा बिम्बों का निर्माण करता रहता है। इनके काव्य में अनेक स्वप्न–बिम्ब प्राप्त होते हैं परन्तु मूलतः इन कवियों के स्वप्न–बिम्ब काम के विस्थापन के रूप में व्यक्त हुए हैं। सतसई कवियों ने स्वप्न के अंतर्गत संयोग–सुख की चर्चा अनेक स्थानों पर की है। जिस प्रकार सपने में प्राप्त संपत्ति कोई महत्व नहीं रखती, उसी प्रकार स्वप्न में प्रिय की प्राप्ति भी अर्थहीन होती है। यदि स्वप्न में प्रियदर्शन होने के बाद स्वप्न टूट जाए तो प्रेमी की मानसिक दशा अव्यवस्थित हो जाती है।

संदर्भ –

1 डॉ. श्याम सुन्दर दास ;संपा.द्ध, सतसई सप्तक, रसनिधि–सतसई, दोहा 351
2 ज़किया रफ़त कृत 'ये खालिश कहाँ से होती' पृ0 38
3 ज़किया रफ़त कृत 'ये खालिश कहाँ से होती' पृ0 38
4 'ज़किया रफ़त' ''ये खलिश कहाँ से होती'' महाभारत पृ0 72
5 'ज़किया रफ़त' ''सहचर'' पृ0 38
6 'ज़किया रफ़त' ''मायावी'' पृ0 67
7 'ज़किया रफ़त' पृ0 30
8 'ज़किया रफ़त' पृ0 68
9 'ज़किया रफ़त' पृ0 43
10 'ज़किया रफ़त' पृ0 64
11 'ज़किया रफ़त' पृ0 12
12 'ज़किया रफ़त' पृ0 90
13 'ज़किया रफ़त' पृ0 51
14 'ज़किया रफ़त' पृ0 27
15 'ज़किया रफ़त' पृ0 2